Impact Factor-8.575 (SJIF) ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refreed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

January-2023

(CCCLXXXIII) 383-B

स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी भाषा, साहित्य, फिल्म और पत्रकारिता का योगदान

Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Executive Editor
Dr. M.N. Kolpuke
Principal
Maharashtra Mahavidyalaya,
Nilanga Dist. Latur

Editor
Dr. Govind G. Shivshette
Department of Hindi,
Maharashtra Mahavidyalaya,
Nilanga Dist. Latur

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar Publications

Impact Factor-8.575 (SJIF) ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed & Refreed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

January-2023

(CCCLXXXIII) 383-B

स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी भाषा, साहित्य, फिल्म और पत्रकारिता का योगदान

Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Executive Editor
Dr. M.N. Kolpuke
Principal
Maharashtra Mahavidyalaya,
Nilanga Dist. Latur

Editor
Dr. Govind G. Shivshette
Department of Hindi,
Maharashtra Mahavidyalaya,
Nilanga Dist. Latur

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar Publications

'Aadhar' Peer-Reviewed & Refereed Indexed Multidisciplinary International Research Journal
Impact Factor -(SJIF) –8.575, Issue NO, (CCCLXXXIII) 383- B
ISSN : 2278-9308
January, 2023

20	स्वाधीनता आंदोलन की प्रतिकात्मक नाट्याभिक्ति: अनुशासन पर्व प्रा. डॉ. धीरज जनार्धन व्हत्ते	73
21	भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में राष्ट्रभक्तिपरक गीतों का योगदान डॉ. करिश्मा अय्युब पठाण	78
22	पं.रामनरेश त्रिपाठी की कविता 'वह देश कौन-सा है?' में स्वदेश प्रेम डॉ.सुनील गुलाबसिंग जाधव	82
23	स्वाधीनता आंदोलन और सुभद्राकुमारी चौहान डॉ.वडचकर शिवाजी	86
24	घुमक्कड़ राहुल सांकृत्यायन डॉ गोविन्द पांडव	89
25	कवि प्रदीपजी का स्वाधीनता आंदोलन मे योगदान प्रो.डॉ.राजश्री भामरे	93
26	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी साहित्य प्रा. माधवराव गजाननराव जोशी	98
27	चंद्रगुप्त नाटक में युग चेतना प्रो डॉ.ज्ञानेश्वर गाडे	103
28	स्वाधीनता आंदोलन और महाप्राण निराला का काव्य डॉ. केशव क्षिरसागर	106
29	स्वाधीनता आंदोलन और कवि माखनलाल चतुर्वेदी। डॉ विलास तुकाराम राठोड	110
30	स्वाधीनता आंदोलन का दहकता दस्तावेज माखनलाल चतुर्वेदी का काव्य प्रा.डॉ. भगवान रामकिशन कदम	114
31	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी काव्य प्रो. डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर	118
32	स्वाधीनता आंदोलन और यशपाल का औपन्यासिक साहित्य प्रा.डॉ. एकलारे चंद्रकांत नरसप्पा	121
33	स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी के पत्र-पत्रिकाओं का योगदान... डॉ. प्रकाश भगवानराव शिंदे	124
34	अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल और स्वाधीनता चेतना प्रा. डॉ. लुटे मारोती भारतराव	129
35	स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी फिल्म डॉ.ज्योति संभाजीराव मुंगल	133
36	स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी साहित्यकारों का योगदान डॉ. संतोष सुभाषराव कुलकर्णी	138
37	स्वाधीनता आंदोलन के परिप्रेक्ष्य में प्रेमचंद के उपन्यासों का योगदान प्रो.डॉ.जानअहेमद के.जे.	143
38	स्वाधीनता आंदोलन में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का योगदान प्रा. डॉ. सुचिता जगन्नाथ गायकवाड	146
39	स्वाधीनता आंदोलन - भारतेन्दु का साहित्य डॉ.रज़ियाशहेनाज़शे.अब्दुल्ला	149
40	स्वाधीनता आन्दोलन में हिंदी फिल्मों का योगदान रजत अभिनव,	153
41	स्वाधीनता का सच्चा स्वर : भारतेंदु हरिश्चंद्र डॉ.मीरा.पी.आई.	158

'Aadhar' Peer-Reviewed & Refereed Indexed Multidisciplinary International Research Journal
Impact Factor -(SJIF) -8.575, Issue NO, (CCCLXXXIII) 383- B
ISSN : 2278-9308
January, 2023

स्वाधीनता आंदोलन और सुभद्राकुमारी चौहान

डॉ.वडचकर शिवाजी
सहाय्यक प्राध्यापक कै.र.व.म.सोनपेठ जि.परभणी ,मो.न.8983848788
Email Id : sayaliswapnilwsa@gmail.com

किसी भी राष्ट्र के विकास एवं पतन में साहित्य की ऐहम भूमिका रहती है। साहित्य समाज की मूल्यवान धरोहर है। साहित्य को हम समाज का दर्पण भी कहते है। जिस तरह बिना सूरज के चारों और अंधाकार होता है उसी प्रकार बिना साहित्य कोई भी देश प्रकाशमान नहीं हो पाता। भारतीय साहित्य हर समय मंगलकारी और कल्याणकारी रहा है। इसमें समन्वय की भावना चिरकाल से विद्यमान रही है। मानवजीवन के सर्वाधिक समिकर होने के कारण आधुनिक यु कवियों कविता में ने बड़ी शक्ति एवं महत्व प्राप्त कर लिया है। कविता अब काव्य मात्र मनोरंजन का साधन अथवा कल्पित काव्य नही है। वह मानव जीवन का ऐसा काव्य बना है, जिससे मनुष्य को समग्रता से समझने और अभिव्यक्त करने का प्रयास किया जा रहा हैं। आज का युग विज्ञान का युग रहा है। इस युग में हम देखते हैं कि समाज राष्ट्र में अनेक परिवर्तन आये, परंतू विज्ञान के विविध अविष्कारों के बीच भी हम जानते हैं कि मानव इतना अकेला हो गया कि इसमें प्रेम, दया, ममता, स्नेह का अभाव मिलता है। देश में एकता का अभाव सा छा गया। इन सबका कारण बन गया संघर्ष। ऐसे संघर्ष के युग में हमारा देश जो पराधीनता की जंजीरों में जकड़ा हुआ था उसकी याद आज आती है। ऐसे संघर्षमय काल में मेरी दृष्टि से समाज में यदि कोई जागृति ला सकता है तो केवल साहित्यकार ही। पराधिन भारत में संघर्ष के समय में हिन्दी कवियों ने राष्ट्रीय समस्याओं के चित्रण साथ ही साथ भारतीय जनता में क्रांति का नारा लगाकर जागृत करने का प्रयास किया है।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में निराला, बालकृष्ण शर्मा नवीन अज्ञेयजी, सुभद्राकुमारी चौहान आदि के कविता मे हमे राष्ट्रप्रेम की झांकी दिखाई देती है। उपरोक्त कवियों ने राष्ट्रीय आंदोलन के विविध पक्षों की उपेक्षा न कर, आन्दोलन की चेतना के आंतरिक और बाहय निरुपण को अपने कवित का विषय बनाया। देश और काल के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए स्वातंत्र्य संग्राम के ऐतिहासिक तथ्यों कों कवियों ने ग्रहण किया। आज अगर हम पीछे मुडकर देखेंगे तो भारत के स्वाधीनता आंदोलन की परिस्थितियों के रोमांच हमारे सामने खडे हो जाते है। हममें स्फुर्ती निर्माण होती है। भारत देश को स्वतंत्र करने के लिए समाज के हर तबके के लोगोंने अपना योगदान दिया। लोगों के लढ़ने के साधन अलग-अलग थे परंतु हर एक व्यक्ति का उद्देश स्वाधीनता थी। 1857 में झासी की राणी लक्ष्मीबाई ने जो वीरता दिखाई थी उसकी झलक सुभद्राकुमारी चौहानजी की कविता में नजर आती हैं।

"सिंहासन में हिल उठे राजवंशों ने भृकुटी तानी थी।
बुढ़े भारत में भी आई फिरसे नई जवानी थी।
गुमी हुई आजादी की किंमत सबने पहचान थी।
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी।
चमक उठी सन सत्तावन में तलवार पुरानी थी।"

ऐसी वीरता का जयघोष किया साथ ही रचनाकारों ने वीरों को प्रेरणा देने की कोशिश अपने कलम के माध्यम से करते रहे। सुभद्राकुमारी ने लेखन के साथ-साथ राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय रुप से भाग लिया था उन्होने असहयोग आंदोलन मे सहभाग लिया था और इनका नतीजा उन्हे बंदी बनाकर जेल में डाल दिया गया। स्वाधीनता

आंदोलन के समय में कलमकार को राष्ट्रीय चेतना पर लिखने की अनुमति नहीं थी। राष्ट्रीय चेतना की भावना को लेकर लेखन करनेवाले पर अंग्रेजो की तीखी नजर थी। फिर भी रुके नहीं सुभद्राजीने अपनी वीरों का कैसा हो वसंत कविता में इस बात का उल्लेख किया है।

"भूषण अथवा कविचंद नहीं
बिजली भर दे वह छंद नहीं
है कलम बंधी स्वच्छंद नहीं
फिर हमें बताएं कौन हन्त
वीरों का कैसा हो वसंत।"

इसी तरह उनकी राखी तथा राखी की चुनौती नामक कविताएँ है, जिनमें राष्ट्रीय भावना प्रभावपूर्ण ढंग से अभिव्यक्त हुई हैं। ये उस समय की रचनाएँ है, जब पति-पत्नी, बहन-भाई अपना सब कुछ भुलाकर स्वतन्त्रता संग्राम के सिपाही बन गए थे। इन कविताओं में सुभद्राजी उस वीर भाई का आव्हान करती है, जो भारत माँ के लिए लोहे की भारी राखी पहनने को तैयार हो।

"लो आओं भुजदण्ड उठाओं इस राखी में बँध जाओ।
भरत-भूमि की रजपूती को एक बार फिर दिखलाओं।
देखो भैया ! भेज रही हूँ तुमको, तुमको राखी आज।
साखी राजस्थान बनाकर रख लेना राखी की लाज।।"

सुभद्राकुमारी चौहान की कविताओं में शरीर को रोमांचित कर देने वाला, मन को हर्ष उल्लास से भर देनेवाला आवाहान है। क्रांति की अमर प्रेरणा झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के महत्वपूर्ण रण कौशल और साहसिक पराक्रम को सुभद्रा जीने इतनी ओजस्विता के साथ प्रस्तुत किया है कि आज भी श्रोता का खून यह कविता सुनकर खौल उठता है।

"चमक उठी सन सत्तावन में वह तलवार पुरानी थी।
बुंदेले हर बोलों के मुंह, हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी।"

सुभद्राजी की कविता वीरों को कैसा हो वसंत यह भाव सिर्फ उनके काव्य में ही सिंचित नहीं है। पराधीनता की ग्लानि को धोने के लिए अपनी श्रेष्ठ शक्तियों का चिंतन किया है। नवोत्थान से प्रेरित होकर स्वाधीनता की समस्या का समाधान करने का कार्य उन्होने किया है। सुभद्राकुमारी चौहान केवल राष्ट्रीय काव्यधारा की कवयित्री ही नहीं एक देशभक्त महिला भी थी। सन 1919 की जालियनवाला बाग हत्याकांड घटना से प्रभावित होकर वहां अंग्रेजों ने भारतीय निहत्थे लोगोंपर अमानुष की तरह गोलियां चलाई गई थी। जालियांवाले बाग में वसंत इस कविता में उन्होंने लिखा है।

"परिमलहीन पराग दाग-सा बना पड़ा है।
हा ! यह प्यारा बाग खून से सना पड़ा है।
आओं प्रिय ऋतुराज ? किंतु धीरे से आना।
यह है शोक-स्थान यहाँ मत शोर मचाना।
कोमल बालक मेरे यहाँ गोली खा-खाकर
कलियाँ उनके लिए गिराना थोडी लाकर।"

साथ ही सुभद्राजी बताती है कि देश की सोई हुई शक्ति को जागृत करने के लिए देश के अतीत अथवा वर्तमान के वीर पुरुषों के पराक्रम एवं महानता का वर्णन काव्य में प्रस्तुत किया जाना अत्यन्त प्रभावी सिध्द होता है। इनके काव्य में प्रकृति यत्र-तत्र देखी जा सकती है। स्वतंत्रता संग्राम के महत्वपूर्ण स्तंभ माने जाने वाले गॉधी जी तथा तिलक को कवयित्रीने प्रमुखता के साथ याद किया है। क्योंकि उन्होने आजादी की लड़ाई को नए आयाम दिये थे। गॉधी जी एवं तिलक का प्रभाव उनके काव्य में राष्ट्रीय चेतना बनकर प्रस्फुलित हुआ है।

"तिलक, लाजपत, गॉधी जी भी
बंदी कितनी बार हुए।
जेल गये जनता ने पूजा।
संकट में अवतार हुए।"

सुभद्राजी की सभी कविताओं में लगभग राष्ट्रव्यापी स्वर मुखरित हुआ है। उन्होने आजादी एवं स्वतंत्रता की तीव्र अभिलाषा पूर्ण कविताओं का भी सृजन किया है। वीर स्तुति की इन पंक्तियों में उनके पावन मनोभाव को दर्शाया है।

"इन कुटिया को महल समझना, हम
बालक अज्ञानी।
पूजा को तैयार खड़े हैं स्वागत !
आओं महारानी।"

निष्कर्षत :

सुभद्राकुमारी चौहान की कविताओं में अंग्रेजोंद्वारा किए गए अत्याचार एवं भारतीय वीरोंद्वारा उनके सशक्त जवाब को बुध्दिमत्ता से प्रस्तुत किया गया है। उनकी कविता इसी इतिहास का प्रतिविंब है। त्याग, बलिदान और समर्पण के भाव उनमें सर्वव्याप्त हैं। विद्रोह का स्वर भी इनकी कविताओं में देखने को मिलता है। अगर विद्रोह इनकी कविताओं का मूल स्वर है, तो बलिदान और समर्पण उनकी प्राण ध्वनि है। हम देखते हैं कि कइयों के अंदर एक ऐसी दृष्टि होती है, जो कलम की नोक पर आकर वीर रस का काव्य बन जाती है। या वही दृष्टि राजनैतिक और सामाजिक आंदोलनों को जन्म देती है सचमुच ही वह दृष्टि सुभद्राकुमारी चौहान के कलम में थी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1)झांसी की रानी-कविता सुभद्राकुमारी चौहान
2)वीरों का कैसा हो वसंत - कविता - सुभद्राकुमारी चौहान
3)क्रांतिकारी साहित्यकार सुभद्राकुमारी चौहान-सुमित मोहन
4)भारतीय कविताओं में राष्ट्रप्रेम-डॉ.अर्जुन शतपथी
5)जालीयन वाला बाग में वसंत - कविता - सुभद्राकुमारी चौहान
6)मुकुल तथा अन्य कविताएँ - सुभद्राकुमारी चौहान
7)मुकुल तथा अन्य कविताएँ - सुभद्राकुमारी चौहान

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani
PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani